भगत कबीर – सबद २९

जिह कुलि पूतु न गिआन बीचारी ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२८

जिह कुलि पूतु न गिआन बीचारी ॥
बिधवा कस न भई महतारी ॥१॥
जिह नर राम भगति नहि साधी ॥
जनमत कस न मुओ अपराधी ॥१॥ रहाउ ॥
मुचु मुचु गरभ गए कीन बचिआ ॥
बुडभुज रूप जीवे जग मझिआ ॥२॥
कहु कबीर जैसे सुँदर सरूप ॥
नाम बिना जैसे कुबज कुरूप ॥३॥२५॥

सार: ज्ञान के सभी स्रोत हमारी जागरूकता को नहीं बढ़ाते, कुछ केवल हमारी बुद्धि को तेज़ करते हैं लेकिन साथ ही हमारी अंतरात्मा की पवित्रता और संवेदनशीलता को धुंधला कर देते हैं। हम जो जानकारी बार-बार ग्रहण करते हैं, वह हमारे विचारों, विकल्पों और कार्यों को प्रभावित करते हुए हमारे आंतरिक संसार को आकार देती है। ज्ञान वास्तव में तभी मूल्यवान है जब वह सजगता विकसित करे, हमारी विवेक-बुद्धि को तेज़ करे और हमें सत्य के निकट ले जाए। यदि यह भय, अहंकार, पूर्वाग्रह या बेचैनी पैदा करता है तब इससे जुड़े रहना स्वयं को सूक्ष्म रूप से नुक़सान पहुँचाने जैसा है। इसलिए, अपने विचारों की नैतिकता की रक्षा के लिए इससे दूर हटना, समझदारी भरा निर्णय है क्योंकि जीवन वास्तव में तभी शुरू होता है जब विवेक जागृत होता है।

जिह कुलि पूतु न गिआन बीचारी ॥

उस वंश में, अगर संतान ज्ञान पर विचार नहीं करती है तब इसका अर्थ है कि अंतरात्मा उस सर्वव्यापी स्रोत के साथ अपनी एकता को दर्शाने में असमर्थ या अनिच्छुक है।

बिधवा कस न भई महतारी ॥१॥

यह ऊर्जा साथी-रहित क्यों नहीं हुई? यह उन ज्ञान के स्रोतों की ओर इशारा करता है जो जागरूकता को नहीं बढ़ा सकते इसलिए उनसे न जुड़ना ही बेहतर है। (१)

जिह नर राम भगति नहि साधी ॥

अगर किसी व्यक्ति ने सर्वव्यापी चेतना के प्रति भक्ति नहीं अपनाई है तो यह सार्थक मानवीय जीवन के लिए आवश्यक एकता की समझ की कमी को दर्शाता है।

जनमत कस न मुओ अपराधी ॥१॥ रहाउ ॥

अपराधी जन्म लेते ही क्यों नहीं मर जाता? यह अज्ञानी और गुणहीन लोगों की ओर इशारा करता है जो ऐसा जीवन जीते हैं जिसे जीने योग्य नहीं माना जा सकता क्योंकि जीवन वास्तव में तभी आरंभ होता है जब ज्ञान जागृत होता है। (१)(विराम)

मुचु मुचु गरभ गए कीन बचिआ ॥

बार-बार गर्भ में प्रवेश करने के बाद, हम कैसे बच सकते हैं? गर्भ का यह संदर्भ अचेतन जीवन के निरंतर चक्रों के रूपक के तौर पर देखा जा सकता है जो हमें नकारात्मकता का बंदी बनाकर रखते हैं।

बुडभुज रूप जीवे जग मझिआ ॥२॥

भयानक रूप धारण करके संसार में जीना। यह ऐसी मानसिकता की ओर इशारा करता है जो न केवल भ्रामक है बल्कि अहं में गहरी डूबी हुई है। (२)

कहु कबीर जैसे सुँदर सरूप ॥

कबीर कहते हैं कि भले ही रूप सुंदर दिखाई दे। इसका अर्थ है कि बाहरी रूप प्रशंसनीय हो सकता है फिर भी जागरूकता के बिना, हमारा आंतरिक सार अविकसित रह सकता है।

नाम बिना जैसे कुबज कुरूप ॥३॥२५॥

ध्यान का अभ्यास किए बिना, कुबड़े व्यक्ति के समान बदसूरत हैं। यह दर्शाता है कि आत्म-चिंतन के बिना, हमारे चरित्र में अखंडता का अभाव होता है और कोई भी बाहरी सुंदरता, अनभिज्ञ मानसिकता की भरपाई नहीं कर सकती। (३)(२५)

तत्त्व: भगत कबीर ज़ोर देते हैं कि बाहरी दिखावे और आंतरिक सच्चाई के बीच का फ़र्क यह दिखाता है कि कितनी आसानी से किसी व्यक्ति की छवि को ही उसका असली रूप मान लिया जाता है। कोई व्यक्ति देखने में भले ही प्रशंसनीय, सभ्य या सफल लगे लेकिन आत्म-ज्ञान के बिना उसका आंतरिक जीवन अनजाना और अविकसित रह सकता है। बाहरी सुंदरता भले ही ध्यान खींचे, लेकिन यह उस मन की कमी को पूरा नहीं कर सकती जो डर, अहंकार, पूर्वाग्रह या भ्रम से घिरा हो। किसी व्यक्ति के रूप-रंग को वास्तविक महत्त्व उसकी नैतिकता और उससे झलकने वाली करुणा से मिलता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com